VOL- IX | ISSUE- XII | DECEMBER | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में तनाव का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

गुरूदत्त सिंह ढाका
(शोधकर्ता)

डॉ. अनिल कुमार
(शोध निर्देशक)

शिक्षा जीवन का सम्पूर्ण शास्त्र है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति की मानसिक शक्तियों का विकास करना है। वैदिक काल से शिक्षा को वह प्रकाश माना गया है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रकाशित करने का सामर्थ्य रखता है। इसलिए विद्वानों ने शिक्षा को 'तीसरा नेत्र' कहा है।

शिक्षा का प्रमुख स्तम्भ शिक्षक हैं। यह एक प्रभावपूर्ण अनुभवी तथा ज्ञान रखने वाला व्यक्तित्व होता हैं जिसका कार्य नई संस्कृति को ज्ञान प्रदान करना होता हैं। इसके सम्पर्क में आने से ही शिक्षार्थी में परिवर्तन आता हैं तथा वह समाज की आवश्यकता अनुसार कुशल नागरिक तथा सक्रिय सदस्य बनाता हैं।

शिक्षण प्रभावशीलता

शिक्षण प्रभावशीलता हमारे लिए एक नई अवधारणा सुनते हैं कि कोई शिक्षक मतलब है कि उस शिक्षक ने अपनी भूमिकाओं और कार्यों की है, जैसे कि कक्षा शिक्षण की तैयारी और प्रबंधन की योजना बनाना, विषय का ज्ञान, शिक्षक की विशेषता और उनके अंतर्वैयक्ति अपनी अन्य व्यक्तित्व विशेषताओं में उत्कृष्टता प्राप्त करता है। शिक्षण प्रभावशीलता इस बात की ओर इंगित करता है कि शिक्षक के प्रदर्शन का प्रभाव विद्यार्थियों पर है। शिक्षण प्रभावशीलता इस बात पर भी निर्भर करता है कि शिक्षक कक्षा प्रदर्शन में कौन सी विषयवस्तु का प्रयोग करता है। शिक्षण प्रभावशीलता, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पूरे कार्यक्रम के केंद्र होने के नाते इसका विद्यार्थियों के सीखने के परिणाम का निकट अवलोकन और महत्वपूर्ण विश्लेषण पर सीधा असर पड़ता है। शिक्षण प्रभावशीलता की अवधारणा को समझने के लिए हमें एक प्रभावी शिक्षक के गुणों के बारे में पता होना चाहिए।

किसी भी शिक्षा प्रणाली के उद्देश्यों की प्राप्ति में शिक्षक, विद्यार्थी एवं पाठ्यक्रम तीनों अव्ययों का अलग–अलग एवं सम्मिलित योगदान महत्वपूर्ण होता है। इनमें से एक की भी अनुपस्थिति शिक्षा प्रणाली को अधूरा स्वरूप प्रदान करती है तथा एक का भी असहयोग होने पर शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति असम्भव है। इसके अतिरिक्त शिक्षण अधिगम उद्देश्य, शिक्षण विधियाँ एवं शैक्षिक तथा समाजिक वातावरण कुछ अन्य आधारभूत तत्व है जो शिक्षण एवं अधिगम को सफल एवं सौद्देश्य बनाने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते है। शिक्षण को प्रभावी बनाने में इनका विशेष महत्व है। अत: शिक्षण प्रभावशीलता से तात्पर्य सीधे अर्थ में यही होगा कि छात्र के अधिगम (सीखने) की प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावशाली बनाया जाए, जिससे वह अधिकाधिक अनुभव प्राप्त कर उन्हें अपने व्यवहार में ढालें। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक छात्र को सूचना प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रविधियों का उचित समय पर प्रयोग कर उसे प्रभावी बनाता है। परिणामस्वरूप प्रभावशाली शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से छात्रों के अनुभवों में व्यापकता आयेगी जिससें वह व्यवहार परिवर्तन करने में सफल होगा।

तनाव

तनाव व्यक्ति के प्रत्यक्ष योग्यता से अधिक कार्य की मांग करना है। जब व्यक्ति कार्य को अच्छी तरह से करने को तैयार न हो, तब तनाव होता है। तथापि विद्यार्थी और शिक्षक दोनों के जीवन में तनाव का मुख्य स्रोत विद्यालय को समझा जाता है। इसलिए बहुत से विद्यार्थी पढ़ाई छोड़ देते है या फेल हो जाते है जो प्रत्येक के लिए सही नहीं होता है।

जब मनुष्य किसी चीज को पाने की या अपनी इच्छानुसार किसी से व्यवहार की अपेक्षा करता है और वह उसे नहीं मिल पाता है तो उसमें हलचल उत्पन्न हो जाती है। इससे उसमें तनाव उत्पन्न हो जाता है। तनाव

व्यक्ति की वह मनोशारीरिक दशा है, जो व्यक्ति में उत्तेजना व असन्तुलन उत्पन्न कर देता हैं अर्थात व्यक्ति कार्य भी करता है और परेशान भी रहता है। इस प्रकार विभिन्न इच्छाएं, लक्ष्य की पूर्ति, अपमान, शारीरिक कमी, अतिरिक्त कार्यभार आदि से तनाव उत्पन्न हो सकता है। व्यक्ति के अन्दर आवश्यकता ऐसी चीज है जो उसमें तनाव की स्थिति उत्पन्न कर देती है। किसी चीज की अति या कमी को हम आवश्यकता कहते हैं। दोनों ही स्थिति व्यक्ति में तनाव उत्पन्न कर देती है। जब ये आवश्यकता हमारी पूर्ण हो जाती है तो हमें सुख प्राप्त होता है। वही जब आवश्यकता पूर्ण नहीं होती है तो हमें दु:ख व कष्ट मिलता है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध कार्य के दत्त संकलन कार्य हेतु राजस्थान राज्य के हेतु चुरू जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के ४०० पुरूष शिक्षकों व ४०० महिला शिक्षकों (कुल ८०० शिक्षक) का चयन किया गया है।

विधि–

इस शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया।

उपकरण–

इस हेतु शोधकर्ता द्वारा मानकीकृत उपकरणों के रूप में डॉ. प्रमोद कुमार एवं डॉ. डी. एन. मुथा द्वारा निर्मित 'शिक्षण प्रभावशीलता परीक्षण मापनी' तथा डॉ. के.एस. मिश्रा निर्मित 'शिक्षक तनाव मापनी (TSS)* का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी–

शोध कार्य हेतु शोधकर्ता द्वारा सांख्यिकी के रूप में मध्यमान, मानक विचलन एवं सहसंबंध का प्रयोग किया गया।

शोध के उद्देश्य–

१. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में तनाव का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

विश्लेषण–

1- सारणी संख्या–१

चर	संख्या	मध्यमान	मानक–विचलन	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता स्तर
तनाव	८००	१५२.२७	१९.४४	–०.०८६८	सार्थक सहसंबंध नहीं है
शिक्षण प्रभावशीलता	८००	३१५.०५	१३.१५		

०.०१ व ०.०५ सार्थकता स्तर

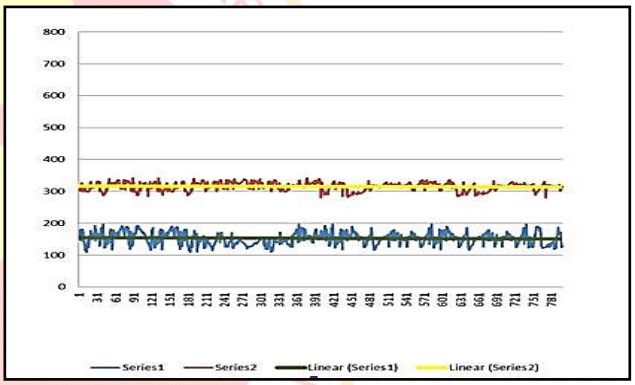

परिणाम एवं व्याख्या–

सारणी संख्या १ के अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में तनाव का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमश: १५२.२७ और ३१५.०५ है। इन दोनों समूहों का मानक विचलन क्रमश: १९.४४ और १३.१५ है तथा दोनों के मध्यमानों का सहसंबंध गुणांक –०.०८६८ है। मुक्तांश १५९८ (n–२) के लिए ०.०५ स्तर पर त का मान ०.०४३८ तथा ०.०१ स्तर पर त के मान ०.०५७५ से परिगणित मान कम है। अत: परिकल्पना 'उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में तनाव का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।' को पूर्णत: स्वीकृत किया जाता है।

दोनों के मध्य शून्य सहसंबंध प्राप्त हुआ है जैसा कि लेखाचित्र से भी स्पष्ट हो रहा है।

सारांश–

अध्ययन के परिणाम से उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में तनाव का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव पर प्रकाश डालने में मदद मिलेगी। यह शोध ग्रामीण और शहरी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में तनाव का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन करने में भी मदद करेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1- **Adaval, S.B., et al (1983),** *An Analytical study of Teacher Education in India*, Allahabad, Amitabh Prakashan.

2- **Adaval, S.B., et al (1976),** *Teacher Education-Problems and perspectives*, New Delhi, NCERT.

3- **Agrawal, J.C. (1978),** *The Progress of Education in Free India*, New Delhi, Arya Book Depot.

4- **Agrawal, J.C. (1983),** *Educational Research*, N.Delhi, Arya Book Depot.

5- **Agarwal, K., Kumar. S.,(2009).** Teacher Effectiveness of Autonomous and Non-Autonomous College Teachers in relation to their Mental Health. Abstract in Journal of Indian Education, Vol. XXIX, No. 2, Aug. 2009, NCERT, P.P. 84-94.

6- **Ahluwalia, S.P. (1978),** *Manual for Teacher Attitude Inventory*, Agra, National Psychological Corporation.

7- **Al-Afendi, M.H. & Baloch, N.A. (1980),** *Curriculum and Teacher Education*, Jeddah, Hodder and Stoughton Ltd.

8- **Allen L. Edwards, (1969),** *Techniques of Attitude scale construction*, Bombay, Vakil & Sons Pvt. Ltd.

9- **Barr, A.S., (1959)**, *'Research Methods'*, in Chester W.Harris (Ed.), Encyclopaedia of Educational Research, New York, Macmillan.

10- **Bennett, Neville (1993),** *Teaching and Teacher Education*, Oxford, pergamon.

11- **Bereday, G. F. and Lanwery (1963),** *Education and Training of Teacher*, London, Trans Brother Ltd.

12- **Bacharch, S., Mitchell, S. (1983).** The Source of Dissatisfaction in Educational Administration, A Role- Specific Analysis, Educational Administration, Quarterly, 19 (1), P. 101-128.

13- **Conley S.H. Bachara, C.H.S. (1989).** The school work environment and teacher career dissatisfaction, Educational Administration Quarterly 25 (1), P.P. 58-81.

14- **Das, D.N., Behera N.P. (2004).** Teacher Effectiveness in Relationship to their Emotional Intelligence, Abstract in Journal of Indian Education, NCERT, Vol. XXX, No. 3, Nov. 2004, P.P. 51-61

15- **Garrete, H.E.** Statistics in Psychology & Education Vakils, Feeder and Simons Ltd., Bombay, 1981.

16- **Kausel, D.R. (1976).** "An Analysis of the qualities contributing to the effectiveness of Selected Principals Dissertation Abst. Int. A 37 : 2, 1976

17- **Kauts, D., Suraj, R., (2011).** Study of Teacher Effectiveness and Occupational Stress in Relation to Emotional Intelligence among Teachers at Secondary Stage. Abstract Journal of History & Social Sciences Vol. I, ISSN : 229-579.

18- **Kulsum,S., Roul. P., Sushanta. K. (2004).** Teacher Effectiveness of Autonomous and Non Autonomous College Teachers in relation to their Mental Health, Abstract Journal of Indian Education Vol. XXIX, No. 2, August 2004, P.P.84-85.

19- अग्रवाल, के. सी.(२००७), 'विद्यालय प्रशासन', आर्य बुक डिपो, दिल्ली।

20- अस्थाना डॉ. वि. (२००९), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–२.

21- अनुराधा देवी, एन.वी. एण्ड वेल्यूधन, ए. (२०१३). जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ वयूमैन लेक्चरस्स वरकिंग इन प्राइविट एण्ड गर्वेमेंट कॉलेज, इण्डियन जनरल ऑफ एप्लाइड साइकोलोजी, ४०, २५–२८.

22- चन्दराई, के. (२०१०). ओक्यूपेशनल स्ट्रैस इन टीचस, नई दिल्ली : ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन।

23- जैन, किशनचंद (१९९९), 'शैक्षिक संगठन, प्रशासन एवं पर्यवेक्षण', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

24- बार्गवाल्टर आर. (१९६५), एजूकेशन रिसर्च इन इन्ट्रोडक्शन, नई दिल्ली, डेविड सिक्की कम्पनी, नई दिल्ली।

25- भटनागर, सुरेश (१९९६), विवेचनात्मक अध्ययन, कोठारी कमीशन, एजूकेशन कमीशन, आर. लाल बुक डिपो निकट गवर्नमेंट इन्टर कॉलेज, मेरठ।

26- भटनागर, सुरेश, सक्सेना अनामिका (१९९७), विवेचनात्मक अध्ययन, कोठारी कमीशन, एजूकेशन कमीशन, आर. लाल बुक डिपो निकट गवर्नमेंट इन्टर कॉलेज, मेरठ।

Webliography:-

1. www.rspb.org.uk/webcams/projects
2. www.bbc.co.uk/schools/scienceclips/
3. www.ase.org.uk
4. www.elsevier.com/
5. www.shodhganga.net
6. ww.usq.edu.au/users/albino/papers/site99/1345.html
7. http://www.nict.com/rajasthan-project.html

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com